आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पजीकरण संख्या : P/RTK/10/2011-13

सृष्टि संवत् 1960853113
विक्रम संवत् 2069
दयानन्दाब्द 189

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर

वर्ष : 9 अंक : 41 रोहतक, 28 मार्च, 2013 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न

गतांक से आगे...

❑ **सत्यवीर शास्त्री, मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा**

हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में चौ० हरिसिंह सैनी द्वारा ओ३म् ध्वज फहराने के उपरान्त **'वेद एवं वैदिक शिक्षा सम्मेलन'** विधिवत् आरम्भ हुआ। इस सम्मेलन की अध्यक्षता तपोमूर्ति वेद एवं

व्याकरण के विद्वान्, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के प्रधान आचार्य श्री बलदेव जी ने की। इस सम्मेलन का संचालन वैदिक विद्वान् मनुस्मृति के भाष्यकार सुरेन्द्रकुमार प्राचार्य ने किया। उन्होंने निम्न वेदमन्त्र के उच्चारण के साथ भूमिका के रूप में कथन आरम्भ किया—

अच्छिन्नस्य ते देव सोम सुवीर्यस्य रायस्पोषस्य ददितारः स्याम।
सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा स प्रथमो वरुणो मित्रोऽअग्निः॥

इस चराचर जगत् का आदिमूल वह परमपिता परमेश्वर है। उस सच्चे मित्र के समान हितसाधक ईश्वर ने हमारे इस विश्व में आते ही अपनी सर्वोत्कृष्ट वैदिक संस्कृति लोक और परलोक साधने के लिये हमें दी है। हमारा कर्त्तव्य यह है कि हम अपने और जन-जन व प्राणिमात्र की भलाई के लिए इस वैदिक संस्कृति को अपना कर प्राणिमात्र के दुःख-दर्द को नष्ट करते हुए समाज हित का चिन्तन करें।

जिन परिष्कृत संस्कारों से मनुष्य अपने व्यवहार से ऐसा दृष्टान्त प्रस्तुत करे, जिससे व्यक्ति केवल अपना स्वार्थ सिद्ध न होकर प्रत्येक मानव व प्राणिमात्र का हित हो, उन विचारधाराओं का नाम वेद, वैदिक शिक्षा एवं वैदिक संस्कृति है। जैसा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्यसमाज के नौवें नियमों में कहा भी है कि—**'प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिये, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।''**

आज बड़ी ही प्रसन्नता की बात है कि यह वेद एवं वैदिक शिक्षा सम्मेलन वैदिक विद्वान् आचार्य बलदेव जी की अध्यक्षता में उपरोक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिये ही किया जा रहा है जिसमें उच्च कोटि के वैदिक विद्वान् प्रो० ओमकुमार जी, सभा के वरिष्ठ उपप्रधान महात्मा कन्हैयालाल जैसे विद्वान् वक्ताओं के सारगर्भित व्याख्यान सुनने को उपलब्ध हुए।

उसके पश्चात् सम्मेलन के उद्घाटन स्वरूप प्रथम वक्ता के रूप में प्रो० ओमकुमार जी ने मंच पर उपस्थित होकर निम्न वेदमन्त्र से अपना व्याख्यान आरम्भ किया—

तस्मात् यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि यज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥

उस सर्वहुत यज्ञीय ईश्वर से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद का ज्ञान हुआ। अथ चारों वेदों का ज्ञान परमपिता परमेश्वर ने चार ऋषियों के हृदय के माध्यम से मानवमात्र के लिये दिया।

किसी वैदिक विद्वान् से किसी महिला विधिवक्तृ (वकील) ने प्रश्न किया कि क्या कारण है कि ये आर्यसमाज के विद्वान् समस्त विश्व को वैदिकी बनाना चाहते हैं? ऐसा क्यों? विद्वान् ने कहा—मैं भी आप से कुछ प्रश्न करना चाहता हूँ। विधिवक्तृ ने कहा खुशी से प्रश्न कर सकते हो। विद्वान् ने प्रश्न किया—आप सायंकाल किस समय भोजन करती हो? महिला ने उत्तर दिया—सायं 9 बजे। विद्वान् ने कहा—क्या मैं आपके घर सायं 8 बजे आकर आपके साथ भोजन कर सकता हूँ? महिला ने कहा—नहीं, क्योंकि उस समय मैं घर पर होती ही नहीं। विद्वान् ने कहा—मैं 10 बजे भोजन के लिये आ जाऊँ तो? महिला ने कहा—तब भी नहीं, क्योंकि मैं अकेली हूँ, जितना भोजन मैं उस समय बनाती हूँ, उतना खा लेती हूँ। विद्वान् ने कहा कि इसका अभिप्राय यह हुआ कि यदि कोई व्यक्ति आपके घर आये तो उसको आपके घर पर आपकी व्यवस्था के अधीन आपके अनुसार व्यवस्था में रहना पड़ेगा। विधिवक्तृ ने कहा—हाँ, इसमें कोई सन्देह नहीं। उस व्यक्ति को मेरे अनुसार मेरी व्यवस्था में ही रहना पड़ेगा। विद्वान् ने पुनः प्रश्न किया—इस विश्व की ब्रह्माण्ड की रचना किसने की? महिला ने उत्तर दिया—ईश्वर ने। विद्वान् ने फिर प्रश्न किया—वेद का ज्ञान किसने दिया? महिला ने

शेष पृष्ठ 7 पर....

जनता ने यदि महर्षि दयानन्द की बात मान ली होती

❑ लालचन्द चौहान, # 591/12, पंचकूला (हरयाणा)

जनता ने यदि महर्षि दयानन्द की बात मान ली होती तो आज ये विनाशक दृश्य देखने को न मिलते। लोगों ने महर्षि की बातों को गहराई से समझने और उनको अपनाने पर विचार ही नहीं किया। महर्षि की वह कौन-सी बातें हैं, जिनको मान लेने से देश व संसार में विनाशक घटनाएँ न घटती? आओ उन बातों पर विचार करें।

सबसे प्रथम महर्षि ने यह बात कही कि ईश्वर एक है और उसका प्रमुख नाम 'ओ३म्' है। ईश्वर के सत्य स्वरूप को उन्होंने अपने प्रवचनों, ग्रन्थों के माध्यम से समझाने का भरसक प्रयत्न किया कि ईश्वर की कोई प्रतिमा (मूर्ति) नहीं बन सकती क्योंकि वह निराकार है, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान्, अजय, अमर, अभय, नित्य, पवित्र, सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करता है। यदि जनता महर्षि की इस बात को बुद्धि से सोच-विचार कर मान लेती तो आज संसार में इतने मत-मतान्तर न होते, सबका इष्टदेव एक परमपिता परमेश्वर होता। न मन्दिर, न मस्जिद, न गुरुद्वारे, न गिरिजाघर होते, क्योंकि ईश्वर इनमें ही नहीं, वह तो अपनी सर्वज्ञता से कण-कण में समा रहा है, उसकी व्यापकता के वगैर एक अणु भी नहीं है। इन पाखण्ड के अड्डों की कोई आवश्यकता ही न रह जाती।

महर्षि की बात मान लेते तो जनता का विभाजन न होता, काल्पनिक ईश्वरों की जरूरत ही न होती। धर्म के नाम पर अधर्म कार्य न होते, यदि ये मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे आदि न होते तो आपस में झगड़े न होते और सबसे बड़ी बात कि जनता ईश्वर के सत्य स्वरूप, गुण, कर्म, स्वभाव से अनभिज्ञ न होती। जनता को धर्म के ठेकेदारों ने बाँट दिया और एक-दूसरे के प्रति घृणा के बीज बो दिये जिसके कारण जनता आपस में लड़-झगड़ रही है। एक दूसरे के जान के दुश्मन बन बैठे हैं। इन गुरुओं द्वारा लोगों को ऐसे साहित्य पकड़ा दिये जिसमें ईश्वर का कहीं नाम निशान तक नहीं, सिर्फ गुरु ने ऐसी काल्पनिक कहानियाँ घड़ रखी हैं कि लोग उनमें ही उलझकर, गुरु को ही भगवान् मान बैठे हैं। वे ईश्वर को नहीं और न ही जिनको वह दुःखनिवारण भगवान् मानते हैं वे भी नहीं जानते केवल अपनी आजीविका का साधन बना रखा है और व्यापारियों, कारखानेदारों से अच्छा व्यवसाय चला रहे हैं। लोग मन्दिर-निर्माण के लिए धन देने को बड़ा परोपकारी कार्य मानते हैं, जबकि यह सबसे बड़ा पाप का काम है, ये मन्दिरों में पल रहे पण्डे-पुजारी जनता को अन्धकार में धकेल रहे हैं, अज्ञान का प्रचार कर रहे हैं। अज्ञानता के कारण लोग पाप पर पाप किये जा रहे हैं। कहते हैं, गुरु की शरण में आओ, वह सब दुःख आपके अपने ऊपर ले लेंगे, मन्दिर में मूर्ति के आगे मत्था टेको वह सब पाप क्षमा कर देंगे, गंगा में स्नान कर आओ, सारे पाप धुल जायेंगे।

महर्षि ने इसी कारण से मूर्तिपूजा का खण्डन किया था कि मूर्तिपूजा से लोग ईश्वर के स्वरूप से तो अनभिज्ञ हैं, परन्तु इनकी आड़ में पापकर्मों को बढ़ावा मिल रहा है। यदि ये धर्मस्थल मन्दिर, मस्जिद आदि न होते तो लोग इतने पापी न होते। जितना धन इन मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारों, गिरिजाघरों आदि के निर्माण पर लग रहा है यदि यह धन गरीब बच्चों के लिए स्कूल, कालिज, यूनिवर्सिटी, रिसर्च सेंटर आदि खोलने पर खर्च किया जाता तो आज देश में क्या सारे विश्व में कोई अनपढ़ न होता। महर्षि मूर्तिपूजा को रोक कर जनता को विनाश की ओर जाने से रोकना चाहते थे, परन्तु महर्षि दयानन्द की इस बात को मानने की बजाय लोग उनके विरोध में खड़े हो गये और उन पर जानलेवा हमले हुए, अन्त में महर्षि को पाखण्डी अपने रास्ते से हटाने में सफल हुए। यह विश्व का दुर्भाग्य रहा। यदि महर्षि की बात को मान सब ईश्वर की ही स्तुति, प्रार्थना, उपासना, करते तो आज समाज देश, विश्व का झगड़ा मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, गिरिजाघर आदि पर न होते। विश्व में महर्षि दयानन्द वैदिक धर्म की स्थापना करना चाहते थे। इतिहास गवाह है, महाभारत युद्ध से पूर्व सारे विश्व में एक वैदिक धर्म ही प्रचलित था और आर्यों का चक्रवर्ती राज्य था। यह बातें सबको समझाने के लिए महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में लिखी हैं। आर्य सारे विश्व में व्यापार करते थे। वायुयान आदि सभी सुविधाएँ थीं। स्त्रियाँ विदुषी होती थीं। दूसरा वेद का पढ़ना-पढ़ाना छूट गया।

महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि महाभारत युद्ध से आर्यवर्त देश को बड़ा धक्का लगा। युद्ध में बड़े-बड़े विद्वान् योद्धा मारे गये और कुछ काल गति से न रहे, जिसके कारण अज्ञानियों ने, स्वार्थियों ने वेद विद्या का पढ़ाना बन्द कर दिया और अपने स्वार्थवश पुराण आदि पुस्तकों को बना लिया और लोगों को धर्मभ्रष्ट कर दिया। पुराण आदि में सब काल्पनिक कथाएँ घड़ रखी हैं।

महर्षि ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा माना था, जो सभी प्रान्तों में अक्सर बोली समझी जाती है। देश की राष्ट्रभाषा देवनागरी हिन्दी को माना तो गया लेकिन अपनाया न गया। आज देश प्रान्तों में तो विभाजित है ही, परन्तु प्रान्तीय भाषा ने सबको सब प्रान्तों से अलग-अलग कर दिया है। पंजाब में पंजाबी और सिख लोग यह चाहते हैं कि पंजाब में तो पंजाबी बोली-लिखी जाती है, यह सारे विश्व की भाषा हो, इसी प्रकार पंजाब का तो मैंने एक उदाहरण दिया है, महाराष्ट्र में मराठी, गुजरात में गुजराती आदि-आदि ने देश को भाषा के नाम पर बांट दिया। धर्म के नाम पर बंटवारा, भाषा के नाम पर बंटवारा, इसके अतिरिक्त अनेक बंटवारे हैं। जाति का बंटवारा, प्रान्तों का जातियों में बंटवारा, जैसे-ब्राह्मण, जाट, अहीर, गुजर आदि-आदि अनेक जातियाँ हैं। प्रान्तीय जनता जातियों में बँटी और जातियाँ भी जाति न रही, वह गोत्रों में विभाजित हुई। ब्राह्मणों के हजारों गोत्र, जाटों के हजारों गोत्र, राजपूतों आदि-आदि के भी इसी प्रकार। कहीं जाति के नाम पर एकता बनती है तो कहीं गोत्र के नाम पर जाति में विरोधाभास उत्पन्न और लड़ाई-झगड़े उत्पन्न होते ही रहते हैं।

जातियों का भी बंटवारा-जिसको धर्म की संज्ञा दी जा रही है, हिन्दुओं के अनगणित ईश्वर, जितने गुरु वे ही सबके ईश्वर हैं, उन्हीं की पूजा हो रही है, जो जिसको मानता है, उसकी मूर्ति उसके घर में और ईश्वर के स्थान पर उसी की पूजा। गुरुओं में बंटी जनता में झगड़े, दुश्मनी के मामले कितने जनता के सामने आये हैं। सभी ने धर्म के नाम पर अधर्म को अपना रखा है।

देश का बंटवारा करने की सबसे बड़ी शक्ति राजनीति, देश के राजनेताओं ने देश को कुर्सी की खातिर बांट दिया। पहले ही देश का विभाजन कई बार हो चुका है, देश की सीमाएँ भी पड़ोसी देशों ने दबा रखी हैं। महर्षि ने देश की जनता को परतन्त्र देखा, देश की जनता की गरीबी को देखा, वह किसी को दुःखी नहीं देख सकते थे। एक बार वह जा रहे थे तो देखा कि एक बैलगाड़ी कीचड़ के दलदल में फँसी है और किसान उन पर डंडे बरसाये जा रहा है, महर्षि ने देखा कि बैल और किसान कितने मुश्किल में हैं, महर्षि ने कीचड़ में घुसकर गाड़ी को कीचड़ से बाहर निकाल दिया और चल दिये। किसान उनका धन्यवाद करना चाहता था, वह भागकर महर्षि के पास गया और कहा महाराज आपने हम पर बड़ा परोपकार किया है, महर्षि ने उत्तर में कहा मैंने आप पर कोई परोपकार नहीं किया, मैंने तो केवल अपनी परेशानी को दूर किया है, मैं आपकी बैलों की परेशानी से दुःखी था। महर्षि किसी को दुःखी नहीं सुखी देखना चाहते थे और सुखी देखने के लिये सबसे पहले स्वतन्त्रता की बात कही, देश के जिन शूरवीरों ने देशप्रेमी भारत माता के दर्द का आभास करने वालों लाखों माता, बहनों, भाइयों ने आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। कितनों के सुहाग उजड़े, कितनों को बहन का, कितनों को भाई, माता-पिता को बेटा-बेटी का अभाव हुआ। महर्षि केवल देश की ही नहीं सारे विश्व को सुखी देखना चाहते थे। उनका संदेश केवल देशवासियों के लिए नहीं था, सारे विश्व की जनता के लिए था। महर्षि को जिन लोगों ने समझा, उन्होंने महर्षि के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। महर्षि पूर्व की भांति इस भारतवर्ष देश को पुनः आर्यावर्त देश व आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य देखना चाहते थे।

देश का दुर्भाग्य रहा कि वह स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व ही विरोधियों के शिकार हुए। देश को आज राजनेताओं ने इस प्रकार से बांट दिया है अर्थात् देश के ऐसे टुकड़े-टुकड़े कर दिये हैं, जिनका जोड़ने का कोई किसी के पास उपाय नहीं है, केवल

शेष पृष्ठ 8 पर....

* ओ३म् *

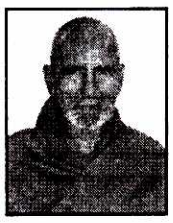

उन्नत हों

-: वेद-मन्त्र :-

यदी वहन्त्याशवो भ्राजमाना रथेष्वा।
पिबन्तो मदिरं मधु तत्र श्रवांसि कृण्वते॥ 5॥ 356॥

'शरीर रूप रथ में इन्द्रियरूप घोड़े जुते हैं' इस उपनिषद् के रूपक का मूल यही मंत्र है। (रथेषु) = शरीर रूप रथों में जुते हुए ये घोड़े (यत्) = जब (ई) = अवश्य [आवहन्ति]= सर्वथा हमें लक्ष्य की ओर ले चलते हैं, तो वहां लक्ष्य स्थान पर पहुंचाकर हमारे यश का कारण बनते हैं। 'ये घोड़े कैसे हैं?' (१) [आशव:] = (अश्नुते अध्वानम्) मार्ग को शीघ्रता से व्यापने वाले हैं। कर्मेन्द्रियां रूप ये घोड़े बड़े (active) चुस्त हैं, तीव्र गति से हमें लक्ष्य की ओर ले चलते हैं। (२) [भ्राजमाना:]= (भ्राजृ-दीप्तौ) ये दीप्त हैं चमकते हैं। ज्ञानेन्द्रियां रूप घोड़े अपने ज्ञानप्राप्ति रूप व्यापार को अच्छी तरह करते हुए इस रथ को सदा प्रकाशमय रखते हैं। दो ही प्रकार के घोड़े हैं—शीघ्रता से कार्य करने वाले व चमकने वाले। इन्हें ही कर्मेन्द्रियां व ज्ञानेन्द्रियां कहा जाता है। पहले शक्ति की वृद्धि का कारण बनते हैं तो दूसरे ज्ञान की वृद्धि का। वस्तुत: जीवन के निर्माण में ये ही दो मुख्य तत्त्व हैं—शक्ति और ज्ञान। ये ही 'ब्रह्म व क्षत्र' कहलाते हैं। संसार भी तो इस दृढ़ (शक्तिशाली) पृथिवी व उग्र=तेजस्वी= प्रकाशमय द्युलोक में ही समाप्त हो जाता है। यहां 'रथ' शब्द रह धातु से बनकर, 'वहन्ति' क्रिया स्वयं तथा 'आशव:' विशेषण 'अश्व्याप्तौ' से बनकर गतिशीलता का उपदेश दे रहे हैं। ज्ञान के लिए भी तो कर्म आवश्यक है।

इस प्रकार अपनी इस जीवन यात्रा में जब हम इस सुन्दर रथ पर बैठकर उन उत्तम घोड़ों के द्वारा आगे बढ़ते हैं तो हमें चाहिये कि [पिबन्तो मदिरं मधु]= आनन्द के देने वाले मधु का पान करते हुए आगे बढ़ें। शहद की मक्खी फूल पर बैठती है परन्तु क्या वहां वह उसकी आलोचना करने लगती है या उसके कांटे गिनने लगती है? नहीं। उसके सारभूत रस को लेकर आगे बढ़ जाती है। न फूल की शक्ल को बिगाड़ती है, न अपना समय नष्ट करती है। परिणामत: कितने सुन्दर 'शहद'=मधु को तैयार करती है। इसी प्रकार हमें भी जिस-जिस के सम्पर्क में आयें उसके गुण को ग्रहण करते हुए आगे बढ़ चलना चाहिये। 'पिबन्त:' में पीते हुए यह continuous की भावना हमें यही तो कह रही है कि रुको नहीं। किसी को हानि पहुंचाने का तो स्वप्न भी न हो। उसके दोषों को ढूंढ़ निकालना हमारे जीवन का लक्ष्य न बन जाय। मधु लेते हुए चलेंगे तो हम भी उन मधुमक्षिकाओं की तरह किसी उत्तम वस्तु का निर्माण कर पायेंगे और ऐसा करने वाले ही [तत्र]= वहां परलोक में प्रभु चरणों में लौटने पर [श्रवांसि]= यशों को [कृण्वते]= करते हैं। उनकी कीर्ति होती है। परलोक में कीर्ति ही इस प्रकार जीवन बनाने का लाभ नहीं, यहां भी यह जीवन 'मदिरम्' आनन्दमग्न होता है। वस्तुत: इस मनोवृत्ति वाला मनुष्य ही जीवन में आनन्द का अनुभव करता है। दोषैकदृक् तो ईर्ष्यालु असूयु बनकर बदला लेने की आयोजनाओं में ही उन्निद्र बने रहते हैं। उनको न रात चैन होती है न दिन में। सो इहलोक को आनन्दमय व परलोक को कीर्तिमय बनाने का मार्ग यही है कि हम इस अपने रथ को दृढ़ व दीप्त बनायें और सब स्थानों से गुण ग्रहण करते हुए आगे और बढ़ते चलें।

हमारे इन्द्रिय रूप अश्व श्याव (श्यैङ् गतौ) गतिमय हों और हम 'श्यावश्व' बनें। तथा काम-क्रोध तथा लोभ से ऊपर उठकर हम 'अ-त्रि' (आत्रेय) बनें।

भावार्थ—गुण ग्रहण करते हुए हम चलते चलें। **—आचार्य बलदेव**

आर्य वर की आवश्यकता

आर्य परिवार से सम्बन्धित सुशिक्षित दो कन्याओं हेतु वर की आवश्यकता है विवरण निम्न प्रकार है—

(1) जन्मतिथि-24.04.1978, योग्यता-एम.ए.बी.एड., ट्रांसलेशन डिप्लोमा (K.U.K.), योग डिप्लोमा (दिल्ली) एन.सी.सी., राष्ट्रीय खिलाड़ी, कद-5'-4'', रंग-साफ, वर्जित गोत्र-नैन, राणा, दहिया।

(2) जन्मतिथि-29.10.1980, योग्यता-एम.फिल. (Phy. Edu.), योग डिप्लोमा-गोल्ड मेडलिस्ट इन योग, कद-5'-5'', रंग-साफ, वर्जित गोत्र-नैन, राणा, दहिया।

सम्पर्क सूत्र :-

मा० रामसिंह, Mob. : 9315810944, 9996316318

'शून्य से शिखर तक : स्वामी श्रद्धानन्द' का लोकार्पण

आर्यसमाज, बी-2 ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली के वेदप्रचार समारोह के समापन (24.02.2013) के अवसर पर प्रख्यात साहित्यकार एवं वैदिक विद्वान् डॉ० सुन्दरलाल कथूरिया डी.लिट्. के सद्य: प्रकाशित ग्रन्थ 'शून्य से शिखर तक : स्वामी श्रद्धानन्द' का लोकार्पण करते हुए।

बाएँ से—(डॉ.) स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती (मनन-आश्रम, पिण्डवाड़ा-राज.), डॉ० सुन्दरलाल कथूरिया (ग्रंथ-लेखक), डॉ० अनिल आर्य (राष्ट्रीय अध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् एवं प्रकाशक), आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री (संपादक-अध्यात्म-पथ)।

प्रख्यात साहित्यकार एवं सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ० सुन्दरलाल कथूरिया के सद्य: प्रकाशित ग्रन्थ **'शून्य से शिखर तक : स्वामी श्रद्धानन्द'** का लोकार्पण मूर्धन्य संन्यासी स्वामी (डॉ.) आर्येश आनन्द सरस्वती (मनन-आश्रम, पिण्डवाड़ा-राज.) ने किया। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द के बाद आर्यजगत् में जिस महापुरुष को सर्वाधिक श्रद्धा के साथ याद किया जाता है वे हैं अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी। उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना कर वैदिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार में अन्यतम योगदान दिया है। उनकी जीवन-गाथा को प्रस्तुत ग्रंथ में चित्रित कर डॉ० कथूरिया ने एक बड़े अभाव की पूर्ति की है, अत: वे धन्यवाद के पात्र हैं। शुद्धि-सभा से जुड़े शुद्धि-समाचार के सम्पादक श्री हरबंस लाल कोहली जी ने इस अवसर पर कहा कि शुद्धि के क्षेत्र में बहुत बड़ा काम करने वाले, दलितोद्धारक, शुद्धि-सभा के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द पर आयी इस पुस्तक का मैं हार्दिक स्वागत करता हूँ। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं इस ग्रंथ के प्रकाशक डॉ० अनिल आर्य ने कहा कि इस ग्रन्थ में स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन की सभी प्रमुख घटनाएँ तो हैं ही, यह युवकों का पथ-प्रदर्शक और प्रेरक भी है, अत: सभी आर्यजनों को इसे अवश्य पढ़ना चाहिये। इस ग्रंथ का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार कर हमें पुण्य का भागी बनना चाहिए।

प्रख्यात वैदिक विद्वान् एवं 'अध्यात्म-पथ' के यशस्वी सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में दुर्घटनाग्रस्त हो जाने के बाद उपचार शैय्या पर बैठे-बैठे अल्पावधि में डॉ० कथूरिया ने इस तथ्यात्मक ग्रंथ की रचना की है, यह उनकी विद्वत्ता और प्रतिभा का प्रमाण है। ग्रंथ प्रेरक, उद्बोधक, पठनीय और मननीय है। आर्यसमाज, बी-ब्लाक, जनकपुरी के युवा धर्माचार्य आचार्य योगेन्द्र शास्त्री ने कहा कि सरल, सुबोध एवं रोचक शैली में लिखित इस ग्रन्थ में स्वामी जी के विषय में प्रचलित अनेक भ्रांतियों का निराकरण करते हुए डॉ० कथूरिया ने उनकी शून्य से शिखर तक की यशोगाथा को बीच-बीच में काव्यात्मक उद्धरणों से चित्रित किया है। उनके इस श्रमसाध्य कार्य का आर्यजगत् में बहुत सम्मान होगा। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री डालेश त्यागी एवं श्री वेदप्रकाश की उपस्थिति गरिमापूर्ण रही। अन्त में डॉ० कथूरिया ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

—चन्द्रशेखर शास्त्री, सम्पादक

भजनोपदेशकों के लिए सभा से सम्पर्क करें—

प्रदेश की सभी आर्यसमाजें अपने आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव या अन्य विशेष कार्यक्रमों के लिए भजनोपदेशकों के प्रोग्राम सुनिश्चित करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक से एक मास पूर्व पत्र द्वारा सम्पर्क करें। **—सभामन्त्री**

ज्ञानमार्गों की रक्षा करो

❑ देवराज आर्य, सेवानिवृत्त मुख्याध्यापक, आर्य टैण्ड हाउस, रोहतक मार्ग, जीन्द

गतांक से आगे...

1. विद्या ददाति विनयम्, विनयं ददाति पात्रताम्। विद्या के द्वारा मनुष्य विनम्र बनता है और उसमें ब्रह्मज्ञान प्राप्ति की योग्यता आ जाती है। यदि विद्या प्राप्त करने के बाद भी मनुष्य में शास्त्रीय गुण नहीं पनपते तो वह निरा पशु ही है। विद्या के द्वारा ईश्वर से लेके पृथ्वी पर्यन्त पदार्थों का सत्य-सत्य ज्ञान प्राप्त होता है। इसलिये मनुष्य और पशु के अन्तर को समझकर **'विद्या'** के द्वारा रंग रूप से नहीं गुणों से मनुर्भव के नारे को सार्थक करना चाहिये।

2. तप-पशुत्व से ऊपर उठकर मनुष्य बनने के लिये तप की विशेष आवश्यकता है। तप क्या है? सुख-दु:ख, हानि-लाभ, मानापमान, सर्दी-गर्मी आदि द्वन्द्वों को सहन करते हुए धर्म के मार्ग पर चलना तप कहलाता है। सत्याचरण इन्द्रिय-दमन, यम-नियमादि का पालन करना एवं मन को धर्मकार्यों में चलाना आदि तप का ही रूप है। इसी भाव को लेकर गीता में भी कहा है कि—**'यज्ञदानतपः कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्।'** अर्थात् यज्ञ, दान, तप-त्याग करने योग्य कर्म नहीं अपितु अनिवार्य कर्त्तव्य कर्म हैं। कितने लोग इन वैदिक कर्मों को करते हैं, यदि नहीं करते तो मनुष्य बनने के लिये इनको करना आरम्भ कर दीजिये।

3. दान-मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दु:ख और हानि-लाभ को समझे। जो व्यक्ति अपनी आत्मा के पुकारने पर भी धन, बल, बुद्धि, ज्ञान, योग, तन और मन से अर्थात् जो भी शक्ति आपके पास है उसके द्वारा दान रूप में किसी की सहायता नहीं करता उसका जीवन पशु से भी निम्नतर है। संसार के सभी प्राणी और पेड़ पौधे नियमानुसार दान में लगे हुए हैं, मानो वे मनुष्य को पुकार कर कह रहे हों कि ऐ मनुष्य तू भी दान के द्वारा अपने जीवन को सफल बना ले।

4. ज्ञान-वास्तव में ज्ञान ही वह तत्त्व है जो मनुष्य और पशु में भेद उत्पन्न करता है। ईश्वर, जीव, प्रकृति, विद्या-अविद्या तथा बन्ध-मोक्ष का ज्ञान केवल मनुष्य को ही हो सकता है। परन्तु आज का मनुष्य केवल भौतिक-वाद में ही उलझकर रह गया है। अध्यात्मवाद के बारे में जानने के लिये उसके पास न समय है और न ही इसकी जरूरत समझता है। जबकि वेद कहता है कि आध्यात्मवाद और भौतिकवाद दोनों को साथ-साथ मिला कर चलने से ही कल्याण हो सकता है अन्यथा कोरे भौतिकवाद से पशुत्व जाग उठेगा।

आत्मा और परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करने का अधिकार केवल और केवल मनुष्य को ही परमात्मा ने दिया है। इस ज्ञान के अभाव में केवल शक्ल-सूरत से मनुष्य दिखाई देता है और गुण उसमें पशु के भी नहीं हैं। किसी कवि ने ठीक ही कहा है कि—

मनुष्य जीवन की अजब कहानी देखी,
हर अपनी चीज बेगानी देखी,
हर वर्ग में मनमानी देखी,
आँखों के सामने होती बेईमानी देखी,
पशु से बुरी यहाँ जिन्दगानी देखी,
क्या आपने कहीं सूरत इंसानी देखी?

सत्य, अहिंसा, परोपकार, न्याय, धर्म, ज्ञान, विद्या तथा आस्तिकता आदि गुणों से ही मनुष्य की पहचान होती है। तप-त्याग और दान की उसकी महिमा को बढ़ाते हैं। अत: मनुष्यता के मार्ग पर चलने के लिये मनुष्य को ज्ञानवान अवश्य होना चाहिये।

5. शील क्या है?

अद्रोहः सर्वभूतेषु कर्मणा मनसा गिरा।
अनुग्रहश्च दानं न शीलं तत् प्रशस्यते॥
(महा०शा०पर्व)

अर्थात् मन, वाणी और क्रिया द्वारा किसी भी प्राणी से द्रोह न करना, सब पर दया करना और यथाशक्ति सुपात्र को दान देना यह शील कहलाता है। उपरोक्त गुणों के बिना मनुष्य रूप में पशु ही धरा-धाम पर विचरण कर रहे हैं। यदि हम इन गुणों के आधार पर मनुष्य और पशु में विश्लेषण करें तो मनुष्यता का परिणाम कितने प्रतिशत आयेगा? जब परिणाम ही मनुष्यता का संतोष जनक नहीं है अर्थात् हम मानवीय गुणों में फेल हैं तो धर्म कौन करेगा? और धर्म के बिना सुख कहाँ से आयेगा? इसी आधार पर मन्त्र में कहा गया है कि **'मनुर्भव'** अर्थात् हे मनुष्य यदि तू सुख, शान्ति, आनन्द और मोक्ष चाहता है तो मानवता के मार्ग पर चलना आरम्भ कर दे, इसी में तेरा कल्याण है।

'जनया दैव्यं जनम्'—वेदमन्त्र के इस वाक्य के द्वारा पूर्णत: यह समझाया गया है कि पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति हेतु संसार का ताना-बाना बुनते हुये अर्थात् अपने दैनिक कार्यों को ठीक-ठीक धर्म पूर्वक करते हुए सूर्य का अनुकरण करना। ज्ञान मार्गों की रक्षा करना। श्रेष्ठ काम करने वाले लोगों के कर्मों को आगे बढ़ाने में पूरा प्रयत्न करना। ये सभी कार्य मनुष्य बनकर चलने से होंगे इसलिये जीवन में मानवता धारण करके चलना। परन्तु एक बात पर विचार कर कि जिन कल्याणकारी कर्मों को करने की तूने प्रतिज्ञा की है, तेरे संसार से चले जाने के बाद इन ज्ञान तन्तुओं को कौन विस्तृत करेगा, इस ज्ञान गंगा को कौन बहायेगा? कौन चलायेगा इस दुनिया को वेदमार्ग पर? इसके लिये एक काम करना **'जनया दैव्यं जनम्'** अर्थात् दिव्य गुण, कर्म, स्वभाव युक्त संतान उत्पन्न करके जाना अर्थात् श्रेष्ठ गुणों वाले समाज का निर्माण करना जिसका लक्ष्य मानवता को सत्य, अहिंसा, परोपकार, तप और कर्त्तव्य पालन के मार्ग पर आरूढ़ करना हो। आज मनुष्य-मनुष्य के साथ जितना छल-कपट, अत्याचार और स्वार्थपूर्ण व्यवहार कर रहा है इतना तो कोई पशु भी नहीं करता।

प्राचीन इतिहास का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि जब तक आर्य जाति इस मन्त्र पर विचार करके संसार को धर्म मार्ग दिखाती रही तब तक भारत संसार का गुरु कहलाया। जरा रामायण काल को देखें, राम की महानता किस बात में थी? राम की महानता **'मर्यादा-पालन'** और **'धर्म-पालन'** में थी। धर्म की परिभाषा को समझकर ही उन्होंने **'रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्राण जाइ पर वचन न जाई॥'** के नारे को पूर्णत: सार्थक करके दिखा दिया। उन्होंने केवल अपने ही कुल की मर्यादा को कायम नहीं रखा अपितु संसार के सम्मुख एक आदर्श आज्ञाकारी, तपस्वी, त्यागी पुत्र, विशाल हृदय भाई, विश्वासी मित्र, निर्लोभी शासक एवं दुष्ट दलनकारी क्षत्रिय के रूप में समर्पित करके आने वाली पीढ़ियों के लिये अमरता का दीपक जला दिया जिसके दिव्य प्रकाश में हम युगों-युगों तक अपने जीवन की राहें निश्चित करते रहेंगे।

इसी प्रकार श्रीकृष्ण के जीवन की महानता **'योग'** में थी। वे महान् योगिराज, कुशल राजनीतिज्ञ, पापियों के दलनकर्त्ता, निरभिमानी, निर्भीक, दूरदर्शी एवं सफल प्रशासक थे। उन्होंने उस समय अनेक छोटे-छोटे राज्यों में बिखरे राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने का पूर्ण प्रयत्न किया।

महर्षि दयानन्द के उपकारों को हम कभी नहीं भुला सकते और उनके ऋण से कभी अनृण भी नहीं हो सकते। महर्षि ने अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु घोर तप, त्याग एवं परिश्रम किया। बड़ी श्रद्धा, सेवा एवं लग्न से गुरु के चरणों में रहकर जो वैदिक ज्ञान प्राप्त किया, गुरुदक्षिणा में संसार के हित के लिये वह ज्ञान ही नहीं, अपितु अपना जीवन भी न्यौछावर करके, यह कहते हुये अमर पथ के पथिक बने, **'हे ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो'**।

संसार को सदियों से भूले वैदिक ज्ञान से ज्योतिर्मय कर गये। किसी कवि ने सच कहा है कि—

सौ बार जन्म लेंगे, सौ बार फना होंगे,
तो भी न अदा होंगे, एहसान दयानन्द के।

वास्तव में मानव जाति पर ही नहीं, जीवमात्र के कल्याणार्थ जो कार्य महर्षि ने किये वे गिनाये नहीं जा सकते।

मुमकिन है गिने जायें सहरा के जर्रे,
समुद्र के कतरे, फलक के सितारे।
पर नामुमकिन है गिन सकें हम,
ऐ ऋषि जो अहसां हैं तुम्हारे॥

स्वामी दयानन्द एक दिव्य ज्योति थी। महात्मा गांधी, सुभाषचन्द्र बोस, सरदार भगत सिंह तथा उनके साथी, महारानी लक्ष्मीबाई तथा स्वामी श्रद्धानन्द आदि अनेक महापुरुषों ने जन्म लेकर यह सिद्ध कर दिया कि ज्ञानमार्गों की रक्षा तथा कल्याणकारी समाज की स्थापना उत्तम सन्तान ही कर सकती है।

अत: हम सबका कर्त्तव्य है कि ऋषियों द्वारा बताये ज्ञानमार्गों की रक्षा करते हुए **'मनुर्भव'** के नारे को जीवन में सार्थक करें।

होली का सन्देश

पर्व होली का मनाओ, लेकिन प्रेम व प्यार से।
ज्ञान की ज्योति जलाओ, मिलकर हर इंसान से।
प्रेम की गंगा बहाओ, अपने सद्व्यवहार से।
अज्ञानता को दूर कर दो, वेद के प्रचार से।
उनसे कह दो दुश्मनी, अच्छी नहीं पड़ोस की।
बाज आओ हरकतों से, गर रहना चाहो चैन से।
नाश हो जाता है सब कुछ, जूआ और शराब से।
मानव बनकर जीना सीखो, धन कमा पुरुषार्थ से।
रंग बरसाओ ना ऐसे, जिन में कुछ खुशबू नहीं।
खुद हँसो उसको हँसाओ, जो कभी हँसता नहीं।
मधुमास की मस्ती घनी, छा रही सब ओर है।
आओ गले उसको लगाओ, जो बैठा हुआ उदास है।

—देवराज आर्यमित्र, WZ-428, हरीनगर, नई दिल्ली-64

ऋषि जन्म दिवस पर सेवा यज्ञ

दिनांक 7-8 मार्च 2013 को भाऊ आर्यपुर रोहतक में भव्य कार्यक्रम हुआ। विशेषतया आचार्य वेदमित्र जी ने युवाओं में धर्म तथा सेवा संस्कार हेतु प्रेरित किया। समापन यज्ञ में श्री आनन्द सिंह दांगी विधायक महम यजमान थे। वहीं अनेक युवाओं ने भी यज्ञोपवीत धारण किये। आचार्य जी ने महाविद्यालयों तथा विद्यालयों के छात्रों को आर्यसमाज से जोड़ा है। इसी प्रकार स्त्री-पुरुषों में यज्ञ तथा परोपकार की भी भावना है। इसी हेतु वृद्ध सेवा कार्यक्रम में सैकड़ों वृद्धों की आँख के ऑपरेशन कराये गये। गाँव में गोसवा तथा वृद्ध सेवा हेतु अनेक युवा समर्पित भाव से सेवा करते हैं। इसी प्रकार ग्राम भदाना जिला रोहतक में भी पाखण्डी रामपाल दास की पोल खोलने के लिए आचार्य वेदमित्र जी द्वारा भदाना में 10 मार्च 2013 को वेदप्रचार किया गया। यज्ञ में अनेक श्रद्धालु उपस्थित हुए। अनेक शिक्षाविदों के अलावा युवा भी सम्मिलित हुए।

आचार्य जी ने कहा कि भारत में टी.वी. पर पाखण्ड के बढ़ते प्रचार से युवाओं में परिश्रम से हटने तथा पाश्चात्य संस्कृति के अपनाने से वैदिक संस्कृति के भावों में कमी आ रही है। इस कार्यक्रम में अनेक आर्यों ने जनेऊ धारण किये।

शोक-समाचार

सभा कार्यालयाधीक्षक श्री शेरसिंह के अनुज भ्राता (चाचाजी के लड़के) श्री आनन्द सुपुत्र श्री परसराम कटारिया निवासी राजीव गांधी खेल स्टेडियम के पास लाढौत रोड रोहतक का हृदयगति रुकने (हार्ट अटैक) से दिनांक 20.03.2013 को 35 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया।

परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं परिजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—सुरेन्द्रकुमार 'सरस' सभा कार्यालय, रोहतक

ओ३म्

शिक्षा, स्वास्थ्य व चरित्र-निर्माण का केन्द्र

गुरुकुल भैयापुर लाढौत (रोहतक)

प्रवेश सूचना : सत्र 2013

प्रवेश परीक्षा 10 अप्रैल 25 अप्रैल एवं 10 मई

गुरुकुल भैयापुर लाढौत (रोहतक) ने अत्यल्पकाल में जो कीर्ति अर्जित की है, उससे गुरुकुल की शिक्षा एवंव्यवस्था का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। गुरुकुल के सुविशाल भव्य भवन दूर से ही दृष्टिगोचर होते हैं। विद्यालय भवन, छात्रावास, सभागार, भोजनालय तथा व्यायामशाला, यज्ञशाला आदि के पृथक्-पृथक् रमणीय आधुनिक सुविधापूर्ण सुविशाल भवन सुशोभित हैं। गुरुकुल में आपको प्राचीन तथा अर्वाचीन शिक्षा का अनुपम सामंजस्य देखने को मिलेगा।

गुरुकुल की विशेषताएं—

- प्रविष्ट छात्रों का छात्रावास में रहना अनिवार्य।
- 10+2 तक C.B.S.E. बोर्ड दिल्ली से मान्यता।
- सन्ध्या-हवन, योग-प्राणायाम, नैतिक शिक्षा और नियमित दिनचर्या।
- प्रवेश हॉस्टल में रिक्त स्थानों पर निर्भर।
- इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स।
- आधुनिक स्मार्ट क्लास की व्यवस्था।
- कम्प्यूटर व सभी विज्ञान प्रयोगशालाएँ।
- 10+1, +2 में आर्ट एण्ड साईंस साइड।
- हिन्दी व अंग्रेजी मीडियम।

सम्पर्क सूत्र :- 08607776897, 01262-217550

ऋषि दयानन्द के उपकार

❑ देशराज आर्य, सेवानिवृत प्रधानाचार्य, म०नं० 725, सै०-4, रेवाड़ी

ऋषि दयानन्द के उपकार कितने? हम बता नहीं सकते।
उनकी मधुर वेदवाणी को, हम भुला नहीं सकते॥

जब पाप अधिक हो जाता है, मानवता खो जाती है।
संकटमोचन बनकर जग में, महान् आत्मा आती है।
सत्य-प्रकाश फैलाकर फिर, स्वयं अदृश्य हो जाती है।
सत्य-सनातन मर्यादा यह, युगों से चली आती है।

दयानन्द भी इस भू पर आये, ऋण उनका हम चुका नहीं सकते।
उनकी मधुर वेदवाणी को, हम भुला नहीं सकते॥

पर्वत घाटी वन उपवन, खोज लिया था जग सारा।
सत्य ज्ञान पाने की खातिर, फिरता था मारा-मारा।
संत महात्मा भी भटके थे, छाया हुआ था अंधियारा।
अज्ञानता सर्वत्र फैली थी, कहीं नहीं था उजियारा।

कैसे आये यमुनातट मथुरा में, हम बता नहीं सकते।
उनकी मधुर वेदवाणी को, हम भुला नहीं सकते॥

छत्तीस वर्ष की वय थी और यौवन था भरपूर।
शुद्ध-चैतन्य ब्रह्मचर्य का, चेहरे पर था नूर।
तीन वर्ष में गुरु विरजानन्द से, ज्ञान लिया भरपूर।
जोशी अमरलाल का भोजन आवास में सहयोग रहा भरपूर।

गुरु पूर्णानन्द ने भेजा मथुरा में, एहसान हम जता नहीं सकते।
उनकी मधुर वेदवाणी को, हम भुला नहीं सकते॥

गुरु प्रेरणा लेकर ऋषिवर ने, जीवन अपना वार दिया।
स्थान-स्थान पर जाकरके, हर मानव का उपकार किया।
सत्य विद्या को सत्य माना और सत्य का सदा व्यवहार किया।
पाखण्ड पताका फहराकर, गुरुडम का संहार किया।

कितने जख्म मिले यहाँ उनको, हम बता नहीं सकते।
उनकी मधुर वेदवाणी को, हम भुला नहीं सकते॥

शोकसभा

दिनांक 01.03.2013 को दोपहर 2 बजे ममतामयी श्रीमती शारदा देवी आर्या धर्मपत्नी स्वतन्त्रता सेनानी स्व. श्री छोटूसिंह आर्य की शोक सभा वैदिक विद्या मन्दिर, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में आयोजित की गई। सर्वप्रथम हवन किया गया।

शोकसभा में भंवर जितेन्द्र सिंह-राज्य मंत्री, युवा कार्यक्रम एवं खेल (स्वतन्त्र प्रभार) और रक्षा राज्य मंत्री, भारत सरकार, स्वामी सुमेधानन्द जी, माननीय न्यायाधीश सज्जनसिंह कोठारी (रिटा.), महाशय धर्मपाल आर्य, एम.डी.एच. मसाले वाले दिल्ली, विनय आर्य-सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा आर्य सभा, नई दिल्ली, जगदीश प्रसाद-जखराना वाले, पौत्री प्रीती, पौत्रवधू दिविशा, आर्य कन्या विद्यालय समिति की ओर से समिति प्रधान श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता तथा निदेशक श्रीमती कमला शर्मा ने उनके व्यक्तित्व पर विचार प्रकट करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

असंख्य शोक संवेदना पत्र प्राप्त हुए जिनमें से मुख्य राजीव आर्य-आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, त्रिलोक पूर्बिया, पूर्व विधायक उदयपुर, भामाशाह राम-स्वरूप दौसा, अजय अग्रवाल-पूर्व नगर परिषद् अध्यक्ष, आर्यसमाज राजगढ़, सतीश भाटिया-चैरिटेबल ट्रस्ट, वी.के. अग्रवाल सनराईज यूनिवर्सिटी हैं।

बनवारी लाल सिंघल-शहर विधायक, इन्द्रसिंह सोलंकी, अशोक माथुर, जीतमल जैन, डॉ. एम.सी. मित्तल, डॉ. पुष्पा गुप्ता, डॉ. हरीश गुप्ता, समस्त व्यापार समिति, समाजों के प्रतिनिधि तथा हजारों गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

—कमला शर्मा, निदेशक आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर (राज.)

पर जग ज्योतिर्मान किया

❑ **सुखदेव शास्त्री सिद्धान्तवाचस्पति, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक**

कौन ऋषि था जिसने फिर से, वेदों का संदेश दिया।
आर्यजनों को पुनः जगाकर, अमृत-सा उपदेश दिया॥
नवल क्रान्ति की शिखा दीप्त कर, बिखराई चहुँ अरुणाई।
किसके सिंह निनादों से जग गई, भरत-भू तरुणाई॥
किसने फूंका स्वतन्त्रता का मन्त्र, स्वदेश के प्रांगण में।
अंगड़ाई ले उठी भरत-भू, जगी चेतना कण-कण में॥
भगत-बोस-बिस्मिल-सावरकर, किससे हुये अनुप्राणित।
किसके जीवन से ज्योतित हो हुए लाजपत राष्ट्रसमर्पित॥
किसके सतत प्रयासों से यह मिली हमें है आजादी।
किसने रोकी मानवता की, मानव कर से बरबादी॥
धर्माऽऽडम्बर-पाखण्डों को, किसने निर्भय ललकारा।
धर्म-क्षेत्र के ठेकेदारों को, किसने था फटकारा॥
किसता उर हो उठा द्रवित था, सुनकर गऊओं का क्रंदन।
नारी जाति का उद्धारक बन, किसने किया उन्हें वन्दन॥
किसने पालन ब्रह्मचर्य कर जगती का उपकार किया।
किसने अपने अरिदल को मधु मिश्रित-सा शुचि प्यार दिया॥
किसने दूर किया भारत की, विधवाओं का दारुण दुख।
बाल-विवाह निषिद्ध बताया, वर्णाश्रम का पालन सुख॥
कौन महान् हिमालय से भी, गंगा से था अधिक सुदिव्य।
नव भारत का निर्माता वह, कौन ऊषा से भी था नव्य॥
महामनुज वह कौन हमारा, सागर से भी अति गम्भीर।
किसने सारे महिमण्डल को दिया चुनौती बन अति धीर॥
किसने वैदिक धर्म ध्वजा को, फिर से नव-सम्मान दिया।
'राम-कृष्ण' की रक्षा करके, जन-जन को अभिमान दिया॥
मृत्युंजयी! किसके पद तल पर, हुआ विनम्र गगन था।
किसके जीवन से धरती पर, आया नव-जीवन था॥
दलितोद्धार-अछूतोद्धार किया, किसने बन सेनानी।
किसने लिखी पुनः मानवता की, यह गौरव भरी कहानी॥
किसने किया राष्ट्रभाषा पद पर हिन्दी को स्थापित।
किसने दिया अमृत उस कण को, जो था अब तक अभिशापित॥
किसने भरा धरा के उर में, नव-जागृति का स्पन्दन।
'ओ३म्' तथा **'वेदों'** का किसने किया मधुरतम अभिनन्दन॥
हिमगिरि से ले हिन्द जलधि तक किसने जय उद्घोष किया।
सत्यं शिवम् सुन्दरता का पावन किसने जयघोष किया॥
जीव प्रकृति की, परमेश्वर की, किसने भ्रांति विलीन किया।
किस ऋषि ने इस भूमण्डल की, असुर वृत्ति मलीन किया॥
गूँज रहा अवनी अम्बर में, इन प्रश्नों का एक उत्तर।
महामनुज था भारत सुत वह—**'महर्षि दयानन्द ऋषिवर'**॥
कौन ऋषि था जिसने फिर से, वेदों का संदेश दिया।
आर्यजनों को पुनः जगाकर, अमृत-सा उपदेश दिया॥

यज्ञ कार्यक्रम

सृष्टि-संवत् 1,96,08, 53114 चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 11 अप्रैल 2013 बृहस्पतिवार को छोटूराम बहुतकनीकी संस्था रोहतक के प्रांगण में प्रातः 7.30 बजे से 11.30 बजे तक यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

—रणवीर सिंह बल्हारा, प्रधान आर्यसमाज सैक्टर-1, रोहतक

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज मुवाना जिला जीन्द	29 से 31 मार्च 2013
2.	स्वामी भीष्म जयन्ती समारोह, घरौंडा (करनाल)	30 से 31 मार्च 2013
3.	दयानन्दमठ दीनानगर (पंजाब)	1 से 13 अप्रैल 2013

—प्राचार्य अभय आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

श्रद्धांजलि समारोह सम्पन्न

15 मार्च 2013 को लुदास रोड जिला हिसार में श्री रामकुमार आर्य प्रधान वेदप्रचार मण्डल हिसार के फैक्ट्री में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शरबती आर्या के द्वितीय वर्ष की श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन किया गया। उनके नाम से शानदार यज्ञशाला बनाई गई। डॉ० प्रमोद योगार्थी यज्ञ के ब्रह्मा थे। स्वामी सर्वदानन्द जी की अध्यक्षता में एक सभा का आयोजन किया गया। श्रद्धांजलि समारोह में स्त्री आर्यसमाज डोगरा मोहल्ला की बहनों ने ईश्वर भक्ति के भजन रखे। वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही, ब्र० दीपकुमार आर्य, आचार्य मानसिंह जी पाठक आदि ने स्वर्गीय श्रीमती शरबती आर्या को श्रद्धांजलि दी। उनके अनेक प्रेरणादायक संस्मरण सुनाए। आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री ने मंच का संचालन किया तथा आध्यात्मिक प्रवचन रखा। स्वामी सर्वदानन्द जी ने धर्म के दस लक्षण पर प्रकाश डाला। वेदप्रकाश दम्पति ने यजमान का स्थान ग्रहण किया।

श्री रामकुमार आर्य ने सबका धन्यवाद किया। महिलाओं की हाजिरी रिकार्डतोड़ थी। प्रातः 10 बजे से 1.30 बजे तक कार्यक्रम चला। सभी ने ऋषिलंगर में भोजन ग्रहण किया।

—सत्यप्रकाश मित्तल, कोषाध्यक्ष

आर्यसमाज डींग मण्डी (सिरसा) का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज डींग मण्डी (सिरसा) का चौथा वार्षिक उत्सव दिनांक 12-13 मार्च 2013 को विधिवत् सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी सर्वदानन्द कुलपति गुरुकुल धीरणवास, सभा पुस्तकाध्यक्ष वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, सभा उपप्रधान प्रो० ओमकुमार, जगदीश सींवर सिरसा, श्री बदलूराम आर्य व बजरंग लाल आर्य हिसार आदि ने शराबबन्दी, चरित्र निर्माण, नारी-उत्थान, आर्यसमाज का देश की आजादी में योगदान, संस्कारों का महत्त्व, वैदिक सिद्धान्तों की जानकारी पर विचार रखे।

पं० रामनिवास आर्य, बहिन संगीता आर्या के प्रेरणादायक शिक्षाप्रद भजन हुये। उत्सव में गाँव-गुवाण्ड के काफी नर-नारियों ने भाग लिया। आर्यसमाज डींग मण्डी के प्रधान धर्मवीर दहिया, यशवीर आर्य बोदीपाली, बलवीरसिंह पूर्व सरपंच जाण्डवाला, सतेन्द्र आर्य बालसमन्द आदि का विशेष योगदान रहा। **—रवि आर्य, आर्यसमाज डींग मण्डी (सिरसा)**

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में बिक्री हेतु निम्न साहित्य उपलब्ध हैं। कृपया इसका लाभ उठावें।

क्र०	पुस्तक का नाम		मूल्य
1.	प्रो० शेरसिंह : एक प्रेरक व्यक्तित्व	—	20-00
2.	धर्म-प्रवेशिका	—	10-00
3.	धर्म-भूषण	—	12-00
4.	वैदिक सिद्धान्त सार	—	20-00
5.	सत्यार्थप्रकाश	—	30-00
6.	वैदिक उपासना पद्धति	—	8-00
7.	पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जीवन चरित	—	10-00
8.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	—	50-00
9.	संस्कारविधि	—	30-00
10.	हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान	—	30-00
11.	पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जीवन चरित	—	25-00
12.	महर्षि दयानन्द तथा वेदों पर आक्षेपों का उत्तर	—	15-00
13.	आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो?	—	10-00
14.	पंजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन	—	100-00
15.	स्मारिका-2002	—	10-00
16.	प्राणायाम का महत्त्व	—	15-00
17.	महाराणा प्रताप तथा उनके वंशज	—	10-50
18.	स्मारिका 1987	—	10-00
19.	स्मारिका 1976	—	10-00
20.	अमर हुतात्मा भगत फूलसिंह जीवनी	—	15-00
21.	अमर शहीद पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' जीवनी	—	30-00
22.	स्वामी श्रद्धानन्द जीवनी (कल्याण मार्ग का पथिक)	—	80-00

आर्य-संसार

सत्यार्थप्रकाश पर गोष्ठी

आर्यसमाज मड़लाना जिला महेद्रगढ़ के तत्त्वावधान में श्री जयसिंह और श्री राजेन्द्र आर्य की अध्यक्षता में दिनांक 7 मार्च से 9 मार्च 2013 तक महर्षि दयानन्द लिखित अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की गोष्ठी हुई। आचार्य सोमदेव अजमेर ने सत्यार्थप्रकाश की सूक्ष्म समीक्षा की। आचार्य जी ने बताया कि सत्यार्थप्रकाश लगभग तीन माह में लिखा गया। सत्यार्थप्रकाश का अर्थ है सत्य के अर्थ का प्रकाशन। इस ग्रन्थ में चौदह समुल्लास हैं। समुल्लास का अर्थ है अच्छी प्रकार से हर्षित करने वाला। इस ग्रन्थ को प्रथम समुल्लास से लेकर दसवें समुल्लास तक पूर्वार्ध कहा जाता है। एकादश से चतुर्दश समुल्लास तक उत्तरार्ध कहा जाता है। सबसे पहले भूमिका लिखी गई। सत्यार्थप्रकाश मानव मात्र के लिए कल्याणकारी है। इसमें सभी समस्याओं का समाधान है। इसी ग्रन्थ के छठे समुल्लास में विशुद्ध राजनीति है। यह ग्रन्थ मोक्ष का मार्ग दिखाता है। लगभग तीन हजार ग्रन्थों का अध्ययन करने के बाद महर्षि ने इस ग्रन्थ को प्रकाशित किया। मंच संचालन कप्तान आर्य ने किया। सभी श्रोताओं का ज्ञान बढ़ाने के लिए कप्तान जगराम अनेक शंकायें रखीं जिनका आचार्य जी ने विद्वत्ता पूर्वक समाधान किया। श्री रोशनलाल, महाशय फूलचन्द, सूबेसिंह, ब्रह्मदेव आर्य और हरिसिंह ने सहयोग दिया। महाशय हीरालाल, कृष्ण आर्य बनवारीलाल आदि उपस्थित थे।

—कप्तान जगराम आर्य

हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

कहा—उपरोक्त वेदमन्त्र के अनुसार ईश्वर ने दिया। विद्वान् ने फिर प्रश्न किया—किसके लिये दिया? महिला ने उत्तर में कहा—वेद का ज्ञान ईश्वर ने मानवमात्र के लिये दिया तथा वेद मानव मात्र के लिये उपदेश तथा आदेश के लिये है। अत: वैदिक विद्वान् ने कहा कि हम सब उस परमपिता परमेश्वर के ब्रह्माण्डरूपी घर में उसकी सन्तान के रूप में रहते हैं। सन्तान का कर्त्तव्य है कि वह परमपिता परमेश्वर की व्यवस्था रूपी वेद के आदेश को माने। जो मानव ईश्वर के वेदरूपी आदेश का पालन करता है वही तो वैदिकी है। अत: आर्यसमाज के विद्वान् समस्त विश्व को वैदिकी बनाना चाहते हैं।

जब तक विश्व में केवल मात्र एक वैदिक धर्म था। मत-मतान्तर विश्व में उत्पन्न नहीं हुए थे, तब तक इस पृथ्वी पर स्वर्ग था, क्योंकि कहा भी है—

आहारनिद्राभयमैथुनञ्च सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो धर्मेणहीना: पशुभि: समाना:॥

खाना, पीना, सोना, भयग्रस्त होना तथा सन्तान उत्पन्न करना, ये कर्म मनुष्य भी करता है और पशु भी मनुष्य के समान इन सभी कर्मों को करता है। मनुष्य में केवल एक वेदरूपी धर्म ही विशेष है। धर्महीन मनुष्य तो पशु से भी गया-बीता है।

उसके उपरान्त आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वरिष्ठ उपप्रधान महात्मा कन्हैयालाल जी आर्य का वक्तव्य प्रारम्भ हुआ। कथन के आरम्भ में महात्मा जी ने निम्न वेदमन्त्र का उच्चारण किया—

अनुव्रत: पितु: पुत्रो मात्रा भवतु संमना:।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम्॥

अर्थात् पुत्र पिता के अनुकूल कर्मों वाला हो और माता के साथ भी मनसा, वाचा, कर्मणा मेल रखने वाला हो। पत्नी पति के लिये ऐसी वाणी बोले जो शहद भरी हुई मिठास और शान्तिपूर्ण हो। परिवार में इस प्रकार के वेदानुकूल माता-पिता के आदेश को राम, लक्ष्मण के समान मानने वाले पुत्र तथा सीता के समान मृदुभाषी तथा पति की अनुगामिनी पत्नी कब हो सकती है जब पूर्ववत् राष्ट्र में वैदिक शिक्षा के गुरुकुल व विद्यालय होंगे। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने शतपथ ब्राह्मण के इस वचन का उदाहरण देते हुए सत्यार्थप्रकाश में कहा है कि—"**मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद।**" अर्थात् जब तीन उत्तम शिक्षक एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है। वह कुल (परिवार) धन्य होता है। वह सन्तान बड़ी भाग्यवान् है जिसके माता-पिता धार्मिक विद्वान् हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है, उतना किसी से भी नहीं। जैसे माता सन्तानों पर प्रेमपूर्वक उनका हित करना चाहती है, उतना अन्य और कोई नहीं करता। इसलिये **मातृमान्** अर्थात् **प्रशस्ता धार्मिकी, विदुषी माता विद्यते यस्य स एव मातृमान्।** धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी शिक्षा न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करती रहे।

सामान्य जन यह कहते हुए सुने गये हैं कि एक धोबी के कथन मात्र से मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम ने सीता को अयोध्या जैसी नगरी से निकालकर वन में एकाकी सीता को महर्षि वाल्मीकि के आश्रम आचार्यकुल के निकट छोड़ दिया। लेकिन वाल्मीकीय रामायण में ऐसा कथन कहीं नहीं है। सच्चाई यह है कि जिस प्रकार आज के युग में समस्त विश्व के साथ भारत भी, देश में कल-कारखाने, सड़कें तथा बहुमञ्जिले भवन बनाने की कला में निपुण बनता जा रहा है। उसी प्रकार प्राचीन युग में यह आर्यावर्त देश मानव निर्माण की कला में वैदिक शिक्षा के माध्यम से निपुण था। अत: माता सीता ने इस विश्व को वैदिक संस्कृति के महान् गुणों से युक्त प्रतिनिधि देने के लिये, राम जैसे गुणसम्पन्न पति को तथा अयोध्या के चक्रवर्ती साम्राज्य को ठोकर मारकर महर्षि दयानन्द सरस्वती के कथनानुसार गर्भाधान से लेकर पूर्ण शिक्षा प्राप्ति तक, जंगल के भयंकर कष्टों को सहन करते हुये, ऋषियों के आश्रम में रहते हुये, राष्ट्र को वेद, वेदांग की शिक्षा से पारंगत, गुणज्ञ, बल-बुद्धि से सम्पन्न लव, कुश के रूप में ऐसे राजकुमारों को प्रदान किया, जिसका मुकाबला, इन्द्रजित् मेघनाद पर विजय प्राप्त करने वाले लक्ष्मण तथा महाबली हनुमान भी करने में असमर्थ थे। यह समस्त करामात वेद एवं वैदिक शिक्षा की ही तो थी। आज दुर्भाग्य से हमने वेद एवं वैदिक शिक्षा से मुँह मोड़ लिया जिसके कारण, प्रतिदिन बलात्कार, भ्रूणहत्या, गोहत्या तथा चोरी, डाके के कारण देश रसातल की ओर जा रहा है।

'कौआ चला हंस की चाल, अपनी भी खो बैठा', 'धोबी का कुत्ता घर का ना घाट का' आदि कहावत के अनुसार इस देश के आज के कर्णधार इस देश की प्राचीन वैदिक संस्कृति व शिक्षा को नष्ट करके इस देश का इस्लामीकरण व ईसाइयत के प्रचार-प्रसार में लगे हुए हैं। यह कदम वेद, वैदिक शिक्षा, भारतीय संस्कृति, सभ्यता व राष्ट्र के लिये घातक सिद्ध होगा।

इसके उपरान्त वेद एवं वैदिक शिक्षा सम्मेलन के माननीय अध्यक्ष आचार्य बलदेव जी का अध्यक्षीय वक्तव्य आरम्भ हुआ। मान्यवर आचार्य जी कभी भी लम्बा व्याख्यान नहीं देते। उनका वक्तव्य ऋषि प्रणाली के अनुसार सूत्रवत् होता है। जिस प्रकार ऋषियों ने छहों शास्त्रों का लेखन सूत्रों के आधार पर किया इसी प्रकार आचार्य प्रवर का कथन संक्षिप्त एवं उनके त्यागमय जीवन के कारण प्रभावशाली व गरिमामय होता है। उन्होंने निम्न वेदमन्त्र के आधार पर अपना वक्तव्य आरम्भ किया—

ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत् समवर्तयत्।
इन्द्रश्चर्मेव रोदसी॥ (सामवेद 8/182)

इस वेदमन्त्र में कहा है कि (यत्) जब (इन्द्र:) इन्द्रियों का स्वामी अर्थात् जितेन्द्रिय जीवात्मा (चर्म इव) चमड़े की तरह (उभे रोदसी) द्युलोक एवं पृथ्वीलोक को (समवर्तयत्) ओढ़ लेता है। (तद्) तभी इसका (ओज:) ओज ज्योति (तित्विषे) चमकने लगती हैं।

इन बुद्धि व शरीर के ओढ़ने का मतलब है। यही दोनों ही मेरे रक्षक बनें। मानव सदा ही अपने शरीर को स्वस्थ रखे और बुद्धि को सात्त्विक व तीव्र बनाने का सतत प्रयत्न करता रहे। तो मानव इस प्रकार इन दोनों को अपना रक्षक बना सकता है। रक्षा किया हुआ स्वास्थ्य व बुद्धिपूर्वक ज्ञान ही मनुष्य की रक्षा करता है। जो व्यक्ति इनका हनन करता है अर्थात् जो मनुष्य अपनी सेहत का विनाश करता है—केवल मात्र शरीर का स्वास्थ्य (उन्नति) ही मानव का उद्देश्य नहीं हम स्वस्थ रहकर लम्बी आयु प्राप्त कर लें केवल मात्र यही मानव का सफल जीवन नहीं है और केवल मात्र तीव्र बुद्धि प्राप्त कर शरीर को रोगों का घर बना लें, यह भी जीवन की सफलता नहीं है। हम स्वास्थ्य और बुद्धि दोनों का ही सम्पादन करना है। अकेला पहलवानी शरीर तथा अकेला ऋषित्व मनुष्य को पूर्ण नहीं बनाती। अत: स्वास्थ्य व ज्ञान, शरीर व बुद्धि, ब्रह्म व क्षत्र दोनों का समविकास वेद व वैदिक शिक्षा मनुष्य को पूर्णता मानी जाती है। अत: मानव की पूर्णता के लिये हम वेद व वैदिक शिक्षा की ओर लौटना पड़ेगा।

क्रमश:

यह वैदिक धर्म है प्यारा

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

जिन नियमों को धारण करने से सकारात्मक पुष्टि होती है, वे धर्म के अन्तर्गत आते हैं। स्वतन्त्रता के नाम पर जिन नियमों में उच्छृंखलता का समावेश हो जाता है या कठोरता के नाम पर हठ या अव्यावहारिकता का समावेश हो जाता है इस प्रकार के नियम धर्म के अन्तर्गत नहीं आ सकते। वैदिक धर्म उन नियमों की कसौटी पर पूर्ण रूप से खरा उतरता है, जिन नियमों में स्वतन्त्रता है लेकिन उच्छृंखलता नहीं जहां कठोरता है लेकिन अव्यावहारिकता नहीं है। इस तथ्य की पुष्टि का सुन्दर उदाहरण मनु महाराज का यह श्लोक है—

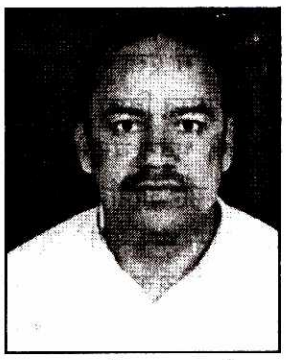

आचार्य अभय आर्य

कामात्मा न प्रशस्ता न चैवेहास्त्यकामता।
काम्यो हि वेदाधिगमः कर्मयोगश्च वैदिकः॥

ऋषि जी ने अर्थ इस प्रकार किया है—''अत्यन्त कामातुरता और निष्कामता किसी के लिए भी श्रेष्ठ नहीं, क्योंकि जो कामना न करे तो वेदों का ज्ञान और वेदविहित कर्मादि उत्तम कर्म किसी से न हो सकें।''

आज स्त्री स्वतन्त्रता की बात की जाती है। इस स्वतन्त्रता के नाम पर ऊल-जुलूल कपड़े पहनना, नाइट क्लबों में जाना, विवाहेतर संबंध बनाना, लड़का-मित्र बनाना आदि कुप्रथाएँ पाली जा रही हैं। दूसरी ओर पौराणिक कठोरता के नाम पर कन्याओं को विद्यालय भी नहीं भेजते थे, विधवाओं पर भोजन, रहन-सहन सम्बन्धी क्रूर नियम लगा देते थे।

वैदिक धर्म ऐसा है जो स्त्रियों को देवी घोषित करता है और उनके सत्कार में परिवार के अन्दर आनन्द व उनके शोक में दुःख मानता है। स्त्री शिक्षा पर बल देता है तथा 'माँ' को प्रथम गुरु मानता है। लेकिन साथ ही मादक द्रव्यों का पीना, दुष्ट पुरुषों का संग, पति-वियोग, अकेली जहाँ-तहाँ व्यर्थ पाखण्डी आदि के दर्शन मिस से फिरती रहना और पराये घर में जाके शयन करना वा वास करना, ऐसे स्त्रियों को दूषित करने वाले दुर्गुणों का भी उल्लेख करता है। आज हैरानी तब होती है जब स्त्रियों से अश्लील फिल्मों में काम लेने वाले, भौंडे गानों पर नृत्य करवाने वाले कहते हैं कि **'स्त्री कोई भोग की वस्तु नहीं है।'** स्त्रियों की सुरक्षा के नाम पर केन्द्र सरकार ने 'आपसी सहमति से परस्पर संबंध बनाने की आयु 16 वर्ष' करने का प्रस्ताव संसद में रख छोड़ा। भला कोई इनसे पूछे कि इस प्रस्ताव का महिला सुरक्षा संबंधी विधेयक के संबंध में क्या औचित्य है? विवाह से पहले के व विवाह के बाद भी स्वपत्नी व स्वपति से भिन्न इस प्रकार के सम्बन्ध 'व्यभिचार' कहलाते हैं। शास्त्रों के अनुसार व्यभिचार से बढ़कर आयुनाशक अन्य कर्म नहीं है। इनकी बुद्धि का दिवालियापन देखिए कि 'व्यभिचार' करने की भी आयु निश्चित कर रहे हैं?

इसी भाँति 'तप' विषय को लीजिए। भोगी व्यक्ति 'तप' को जानते ही नहीं। वे कुतर्क करते हैं कि खाओ-पीओ ऐश करो, ऋण लेकर भी ऐश करो, दूसरा जन्म किसने देखा है? दूसरी ओर पाखण्डी व्यक्ति बिना किसी उत्तम निमित्त के शरीर को घोर कष्ट दे डालते हैं। एक बार महात्मा आनन्द स्वामी ने एक साधु को देखा, जिसने अपना एक हाथ काफी लम्बे समय से ऊपर कर रखा था। उसका वह हाथ बिल्कुल सूख गया था। उस हाथ को देखकर महात्मा आनन्द स्वामी ने उस बाबा से कहा कि भगवान् अगले जन्म में तुम्हें यह हाथ नहीं देगा, क्योंकि तुमने इसका कुछ उपयोग नहीं किया।

इसके विपरीत वैदिक धर्म उत्तम उद्देश्य की सिद्धि के मार्ग में आने वाली बाधाओं को धैर्यपूर्वक सहन करने को तप मानता है। जैनियों द्वारा पट्टी से मुख ढांपने को अव्यावहारिक मानता है। इस प्रकार वैदिक धर्म सिद्धान्तों, व्यवहार की दृष्टि पर खरा उतरता है! इसीलिए तो यह एकमात्र धर्म है, बाकी सब सम्प्रदाय हैं।

वैदिक धर्म की इन्हीं विशेषताओं के कारण तो महाशय सूबेदार करतार जी, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा जैसे आर्य बड़े चाव से गाते हैं—**''यह वैदिक धर्म है प्यारा....''**

शोक-समाचार

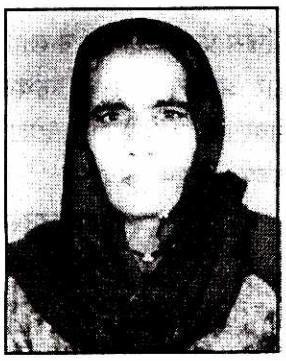

गाँव सांघी जिला रोहतक निवासी भलेराम आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती धर्मो देवी का गत दिवस निधन हो गया। वे 66 वर्ष की थीं। वे अपने पीछे एक बेटा और चार बेटियों सहित भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं। उनकी शान्ति सभा दिनांक 24 मार्च 2013 को प्रातः 10 बजे इन्द्रप्रस्थ नगर, सोनीपत रोड में सम्पन्न हुई।

परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं परिजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

उनके परिवार ने शान्तियज्ञ के उपरान्त निम्नलिखित संस्थाओं को दान दिया—आर्यसमाज सांघी रोहतक 11000 रु०, आर्यसमाज तिलकनगर, रोहतक 1100 रु०, आर्यसमाज रूपनगर, रोहतक 1100 रु०, आर्यसमाज प्रेमनगर, रोहतक 1100 रु०, आर्यसमाज सैनीपुरा, रोहतक 1100 रु०, आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक 1100 रु०, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक 1100 रु०, आर्य कन्या गुरुकुल द्रोण स्थल, देहरादून 1100 रु०, आर्ष कन्या गुरुकुल चोटीपुरा (उ०प्र०) 1100 रु०, आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया, अलवर (राज०) 1100 रु०, चौ० लखीराम अनाथालय रोहतक 1100 रु०, चौ० भरतसिंह मैमोरियल ट्रस्ट, भरत कालोनी, रोहतक 1100 रु०, गऊशाला खिड़वाली (रोहतक) 1100 रु०, गऊशाला डीघल (झज्जर) 1100 रु०, गऊशाला धड़ौली (जीन्द) 1100 रु०, गुरुकुल भैयापुर लाढौत (रोहतक) 1100 रु०।

—सुखवीर आर्य, तिलक नगर (रोहतक)

जनता ने यदि महर्षि दयानन्द की..... पृष्ठ 2 का शेष.....

महर्षि इसका उपाय वेदानुसार वैदिक धर्म का अनुसरण, पालन करना, ईश्वर आज्ञा का उल्लंघन न करना, सभी कार्य धर्म-अधर्म को विचार कर करना, किसी से द्वेषभाव न रखना बता गये थे, परन्तु उनकी बात किसी ने न मानी। इसका परिणाम आज देश भुगत रहा है। कारण वेद विद्या को छोड़ दिया, ईश्वर का विधान वेद है, उसके विरुद्ध कार्य करने आरम्भ कर दिये। आज सब जानते हैं कि नेताओं के के धन बटोरने व कुर्सी का सलामत रखने के सिवाय देश की समस्याओं को जानने व उनका समाधान करने का कोई कार्य ही नहीं है। विपक्ष सत्तारूढ पार्टी के घोटालों को उजागर करने पर सत्तारूढ़ विपक्ष के घोटालों को उजागर करने पर लगी है। देश का करोड़ों धन पार्लियामेंट के सैशन पर खर्च होता है और सारा सैशन लड़ाई-झगड़े, गाली-गलौच, एक दूसरे पर टीका-टिप्पणी करने में व्यतीत हो जाता है, देश की किसको चिन्ता है, चिन्ता अपने घोटालों पर पर्दा डालने की है। आज तक किसी घोटाले करने वाले का क्या बिगड़ा है? वेद क्या कहता है? जो वेद कहता है वही महर्षि दयानन्द कहता है।

निषसाद धृतव्रतो वरुणः पस्त्यास्वा।
साम्राज्याय सुक्रतुः॥ ऋ० 1/25/10

जैसे जो सत्त्व नियम पालने शुभकर्म एवं सुबुद्धि युक्त अतिश्रेष्ठ सभा सेना का स्वामी उत्तम गृहादि पदार्थों से युक्त प्रजाओं में चक्रवर्ती राज्य को करने की योग्यता से युक्त मनुष्य अच्छे प्रकार स्थित होता है, वैसे ही हमको भी होना चाहिये।

ईश्वर का क्या उपदेश है—**मित्रो न एहि सुमित्रध इन्द्रस्यो समाविश।** (यजु० अ०4, मं० 27) राजा और प्रजा पुरुषों को उचित है कि परस्पर प्रीति, उपकार और धर्मयुक्त व्यवहार में यथावत् वर्त, शत्रुओं का निवारण, अविद्या रूप अन्धकार का नाश चक्रवर्ती राज्य आदि का पालन करके सदा आनन्द में रहें, आज के नेता सब को खुश करने के लिए मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, गिरिजाघर आदि सब जगह पहुंच जाते हैं, क्योंकि देश का धर्म वैदिक धर्म एक नहीं है। महर्षि वेदानुसार एक वैदिक धर्म चाहते थे जो सब को सत्य का मार्ग प्रदर्शित करता है।

महर्षि की बातों को न मानकर सब दुःख उठा रहे हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **सत्यवीर शास्त्री** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।